2

''अपने जूते उतार ले''

आग लगी झाड़ी को जो जल नहीं रही थी, को देखकर मूसा की जिज्ञासा बढ़ रही थी। उसकी जिज्ञासा उसे चौकसी से उस दृश्य के निकट ले आई। उसके पास पहुंचने पर झाड़ी में से परमेश्वर ने कहा, ''और निकट मत आ। अपने सैंडल उतार दे, क्योंकि जहां तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है'' (निर्गमन 3:5; NIV)। सही विनती यहोशू के साथ दोहराई गई थी (यहोशू 5:15)। जो भूमि परमेश्वर के पास है, वह पवित्र भूमि है। उस भूमि के लिए कोई अपवित्र वस्तु योग्य नहीं है।

जूते रास्ते की गन्दगी और कीचड़ साथ ले आते हैं, यही कारण है कि पूर्व के लोग किसी मन्दिर या महल में प्रवेश करने से पहले जूते उत्तार देते हैं। पूर्वी देशों में आज भी जूते घर के बाहर रखे जाते हैं। सभा का कमरा पवित्र नहीं है। परमेश्वर की उपस्थिति में आने वाले आराधकों की सभा पवित्र है, चाहे वह कहीं भी इकट्ठी क्यों न होती हो। पेड़ की छाया या झाड़ के नीचे, यदि परमेश्वर वहां है तो वह सभा पवित्र है।

आराधकों की सभा संसार की गन्दगी और बदबू वाली जगह नहीं है। जब आराधक परमेश्वर की सभा में प्रवेश करते हैं तो उन्हें संसार के विचार पीछे छोड़कर आना चाहिए।

यदि कोई परमेश्वर और संसार को एक ही समय में *प्रेम* नहीं कर सकता (1 यूहन्ना 2:15) न ही एक ही समय में परमेश्वर और संसार की आराधना कर सकता है। आराधना हमें संसार में से उसकी सामर्थ और उपस्थिति में बुलाती है, जो हमें अपने आप से भर देना चाहता है। यदि हमारा अपने आप में पर्याप्त होना संसार से इतना अधिक जुड़ा हुआ है कि उसे अलग नहीं किया जा सकता कि उसकी उपस्थिति में आने के लिए हम सांसारिक बातों को पीछे नहीं छोड़ सकते तो हमें कभी पता नहीं चल सकता कि उसमें अपनी पर्याप्तता को ढूंढ़ने का अर्थ क्या है।

संसार को पीछे छोड़कर

यशायाह 52:11 से उद्धृत करते हुए पौलुस ने कुरिन्थुस के मसीही लोगों से आग्रह किया, ''उनके बीच में से निकलो और अलग रहो'' (2 कुरिन्थियों 6:17)। उसका यह आग्रह करना उनके परमेश्वर के साथ चलने में पवित्रता बनाए रखने के संदर्भ में था। वे अफ्रोद की पूजा के लिए प्रसिद्ध इस नगर में मूर्ति पूजा करने के प्रलोभन में आए थे। परमेश्वर ने उन्हें पवित्र लोग होने के लिए संसार में से निकल आने को कहा था, क्योंकि वे पवित्र हैं। उसका पवित्र स्वभाव उसे ग्रहण नहीं कर सकता, जो उसके समाने अपवित्र है। दूसरे सब लोगों की तरह कुरिन्थुस के लोगों के लिए अपने आप को संसार से अलग कर पाना कठिन था, जिसमें से परमेश्वर ने उन्हें बुलाया था।

परमेश्वर ने अब्राहम को अपने पूर्वजों के देश से अलग करके उससे अपने लिए लोगों की एक जाति बनाने के लिए उसे एक नये देश में लेकर आया (उत्पत्ति 22:2-4)। उसने इन लोगों

अर्थात इस्राएलियों से शुद्ध रहने और उसकी बुलाहट के लिए अलग होने का आग्रह किया। उन्हें मूर्तिपूजक जातियों से विवाह करने और उनके साथ किसी प्रकार का समझौता करने की मनाही थी। परमेश्वर की दिलचस्पी बाहरी लोगों के साथ उनके सम्बन्ध में नहीं थी बल्कि उसकी चिन्ता बाहरी देवताओं के साथ उनके सम्बन्ध की थी।

इस्राएल को परमेश्वर की आराधना और सेवा करने के लिए मिस्र से बुलाया गया था। मूसा को फिरौन से यह कहना था कि ''इस्राएल मेरा पुत्र वरन मेरा जेठा है, ... मेरे पुत्र को जाने दे कि वह मेरी सेवा करे'' (निर्गमन 4:22, 23क)। बार-बार मूसा ने फिरौन से परमेश्वर के लोगों को जाने देने के लिए कहा, ताकि वे उसकी सेवा कर सकें। जब परमेश्वर आग लगी झाड़ी में से मूसा को दिखाई दिया था, तो उसने उसे आश्वस्त किया, ''जब तू उन लोगों को मिस्र से निकाल चुके तब तुम इसी पहाड़ पर परमेश्वर की उपासना करोगे'' (निर्गमन 3:12)। परमेश्वर अपने लोगों को अपने लिए चाहता था। वह उनके द्वारा की जाने वाली उसकी आराधना को मिस्रियों के देवताओं की पूजा से नहीं मिलाना चाहता था। परमेश्वर किसी वस्तु या किसी व्यक्ति से मिलाया जाने वाला नहीं था।

जब इस्राएली लोग कनान की अपनी विजय के लिए यरदन नदी पार करने की तैयारी कर रहे थे तो यहोशू ने उनसे कहा, ''तुम अपने आप को पवित्र करो; क्योंकि कल के दिन यहोवा तुम्हारे मध्य में आश्चर्यकर्म करेगा'' (यहोशू 3:5)। ''पवित्र,'' ''शुद्ध,'' उन लोगों के विवरण के लिए इस्तेमाल होने वाले शब्द है, जिन्हें परमेश्वर की उपासना और सेवा के लिए संसार से अलग किया गया है।

''परन्तु राजा सुलैमान फ़िरौन की बेटी, और बहुतेरी और पराई स्त्रियों से, जो मोआबी, अम्मोनी, एदोमी, सीदोनी, और हित्ती थीं, प्रीति करने लगा। वे उन जातियों की थीं, जिनके विषय में यहोवा ने इस्राएलियों से कहा था, कि तुम उनके मध्य में न जाना, और न वे तुम्हारे मध्य में आने पाएं, वे तुम्हारा मन अपने देवताओं की ओर निस्सन्देह फेरेंगी; उन्हीं की प्रीति में सुलैमान लिप्त हो गया'' (1 राजाओं 11:1, 2)। सुलैमान परमेश्वर के बजाय मूर्तिपूजक संसार से अधिक जुड़ गया।

जब यहूदा मन्दिर और यरूशलेम नगर को फिर से बनाने और परमेश्वर की आराधना को बहाल करने के लिए बाबुल की दासता से वापस आया तो एज्रा और नहेम्याह को बार-बार उनके आस-पास के मूर्तिपूजक संसार से अलग रहने पर ज़ोर देना पड़ा था। उनके लिए परमेश्वर की आराधना में परमेश्वर तक पहुंचने से पहले अपने आप को संसार से अलग करना अर्थात पवित्र बनना आवश्यक था (एज्रा 9; 10; नहेम्याह 13)।

मत्ती 2 अध्याय वाले बुद्धिमान लोगों को पूर्व में उनके देश से एक तारे ने अगुआई दी थी। उन्होंने अपने घर और परिवार छोड़कर उसे ढूंढ़ने के लिए जिसकी वे आराधना करना चाहते थे, अजनबी देश में जाने के लिए जंगल में से मीलों सफ़र किया था। कम से कम थोड़ी देर के लिए उन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु की आराधना करने के बड़े आनंद और अधिक देर तक रहने वाले प्रतिफलों के लिए अपने घर की सुख सुविधा और सुरक्षा से मुंह मोड़ा था।[1]

जब यीशु ने पिता के साथ होना चाहा तो वह स्वयं गया था (मत्ती 14:23; मरकुस 6:46; लूका 6:12)। वह मन्दिर में अपना कारोबार ले आने वालों पर भड़का था (मत्ती 21:12)। उसने

बाजारों में लोगों को दिखाने के लिए दान देने वालों और प्रार्थना करने वालों को डांटा था (मत्ती 6:1-6)। क्या ''अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द करके जो गुप्त में है, प्रार्थना कर'' संसार से अलग होने का संकेत देता है ? हमारे लिए संसार से ''बाहर आना'' आवश्यक है। इसलिए हमें परमेश्वर की उपस्थिति में आने पर अपनी सांसारिक चिन्ताओं को पीछे छोड़ देना चाहिए।

बेशक, हमें संसार में रहना है, क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि हम ''जगत में तारों की तरह चमकें'' (फिलिप्पियों 2:15; NIV)। हमारा मसीही मिशन संसार में है (मरकुस 16:15)। संसार के लोगों के साथ सम्बन्ध बनाए बिना हम उस मिशन को पूरा नहीं कर सकते (1 कुरिन्थियों 5:10)। ''संसार में'' होने से बचने के लिए हमें संसार से बाहर जाना पड़ेगा; तब हमारी रोशनी दूसरों के सामने नहीं चमक सकती। परन्तु जब हम आराधना के लिए परमेश्वर की उपस्थिति में आते हैं तो हमें संसार को पीछे छोड़ना आवश्यक है। आराधना संसार से अलग होना है।

संसार में हमें हमारे विश्वास के कारण हमारा विरोध हो सकता है या अलग होने के कारण हमारा मज़ाक उड़ाया जा सकता है। हमें अपने परिवारों से निकाला जा सकता है। सम्बन्धों में तनाव आ सकता है। हमें मूर्ख समझा जा सकता है। एक मसीही के लिए संसार लड़ाई का मैदान है। मेरा मानना है कि यही मुख्य कारण है कि परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग इकट्ठे हों (इब्रानियों 10:25)। आराधना सभा संसार से यानी तूफ़ान से राहत, आराम की जगह सामर्थ जुटाने का समय और भूखी आत्मा को खिलाने के लिए सुरक्षित जगह होनी चाहिए। आराधना शान्ति देने, घावों से चंगाई के लिए अवसर और आंसू सुखाने का समय है। यह परमेश्वर की सुनने अर्थात उसकी प्रतिज्ञाओं और उसकी आज्ञाओं को फिर से सुनने का समय है। यह अपनी कमज़ोरियों को मानने और अपने विश्वास को जताने का समय है। आराधना प्रोत्साहन का समय देती है, जो संसार नहीं दे सकता, ''... प्रभु के सन्मुख से विश्रान्ति के दिन'' (3:19)।

जब कलीसिया पर सांसारिकता हमला करती है तो आरम्भिक प्रभाव आराधना में ही दिखाई देते हैं। आराधना किसी संगीत सभा या राजनैतिक सभा जैसी लग सकती है। संसार के साथ मेल खाने और उसके जैसा लगने के लिए, कलीसिया के आरम्भ करने वाले आमतौर पर आराधना सभा का कार्यक्रम तय करने के लिए समाज में ''कलीसिया के बाहर के'' लोगों में खम्भे गाड़ने की अनुमति देते हैं। मुझे संदेह है कि ऐसे खम्भों पर निर्भर रहने वाले लोग जान-बूझकर परमेश्वर के निर्देश की उपेक्षा करना चाहते हों, परन्तु हैरान होता हूं कि अन्तिम विश्लेषण में आराधना पर सबसे अधिक प्रभाव किसके कार्यक्रम का पड़ता है। डेविड वेलस ने सही अवलोकन किया है, '''संसार' के साथ मेल खाता बनाया गया मसीही विश्वास ... ऐसा मसीही विश्वास बन जाएगा जो अब परमेश्वर, उसके मसीह, उसकी सच्चाई से मेल नहीं खाता।''[2]

उपयोगिता के लिए कई लोग मसीही विश्वास को संसार के दृश्य से मिलाने की कोशिश कर रहे हैं। वे विश्वास को अधिक प्रसिद्ध और दिलचस्प बनाने की कोशिश करते हैं, परन्तु मिलाने की इस प्रक्रिया में परमेश्वर की बहुत सी इच्छा गुम हो जाती है। हमें लग सकता है कि बेहतरीन सुसमाचारीय योजना लोगों से वहां मिलना है जहां वे हैं, ताकि हम उन्हें वहां ले जा सकें जहां परमेश्वर चाहता है कि वे हों। ये तो वैसा लगता है जैसा पौलुस के कहने का अर्थ था ''मैं सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना हूं, कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊं'' (1 कुरिन्थियों 9:22)। परन्तु निश्चय ही पौलुस के कहने का यह अर्थ नहीं था कि संसार के

लोगों को आकर्षित करने के लिए आराधना संसार के जैसे ही लगनी चाहिए। सांसारिक संदर्भ में परमेश्वर तक पहुंचने का प्रयास हमें अच्छा लगने और अपने आप में आनन्दित होने तक छोड़ सकता है, परन्तु यह ध्यान रखना आराधना के उद्देश्य से चूकने का कारण बन सकता है। यदि आराधना के द्वारा संसार को कोई बात कहनी है तो वह बात यह होनी आवश्यक है कि हम अपने परमेश्वर के वफ़ादार हैं। हम संसार से असंवेदनशील या अलगाव नहीं चाहते जिसे परमेश्वर की अत्यधिक आवश्यकता है, परन्तु हमारी प्रमुख इच्छा परमेश्वर की आवाज़ को मानना होनी चाहिए।

मनोरंजन के लिए न होकर परमेश्वर को महिमा देने के लिए प्रवेश करके

आज के समय में आराधकों को उपभोक्ताओं के रूप में देखने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। कारोबारी लोग अपने कारोबार को बढ़ाने के दो ढंग अपनाते हैं। एक तो उपभोक्ताओं को यह विश्वास दिलाना है कि उन्हें उनके द्वारा बनाए गए उत्पाद की आवश्यकता है, और दूसरा यह पता लगाना कि उपभोक्ता क्या चाहते हैं और उनके लिए चीज़ें बनाना। पिछले दो दशकों में कारोबार में बाद वाले ढंग पर अधिक ज़ोर दिया गया है। लोगों की मांग को देखकर चीज़ें बनाने वालों को यकीन है कि वे अपने ग्राहकों को आकर्षित कर ही लेंगे। धर्म में भी कारोबारी संसार के इस नियम को अपना लिया गया है। यदि धर्म को उपभोग किए जाने वाली चीज़ के रूप में देखा जाए तो कम से कम व्यावसायिक दृष्टिकोण से एक तर्कसंगत ढंग यह पता लगाना है कि धर्म में लोग क्या चाहते हैं और फिर उसी के अनुसार उन्हें देना है। आराधना में धर्म द्वारा तुरन्त इस्तेमाल की जाने वाली ''वस्तु'' जो दी जाती है, वह आराधना है। क्या उपभोग करने वाली जनता सचमुच आराधना को चाहती है। जो वे चाहते हैं वह कुछ ऐसा है, जो उन्हें उकताने वाला न होकर रुचिकर लगता हो। वे आराधना सभाओं को उत्तेजित करने वाली, आनन्द देने वाली और मनोरंजन करने वाली चाहते हैं। साफ-साफ कहें तो लोगों की मांग है कि आराधना मन बहलाने का समय होनी चाहिए। जिन लोगों का परमेश्वर से मेल है और वे उसकी उपस्थिति में होने के इच्छुक हैं उनके लिए आराधना उत्तेजित करने वाली, आनन्द देने वाली और सभाओं को मनोरंजक बनाने के लिए बिना किसी विशेष प्रबन्ध के लाभदायक है, परन्तु क्या इसका अर्थ यह है कि जो उपभोक्ता परमेश्वर से मेल नहीं रखता उसे तृप्त करने के लिए हर रविवार मनोरंजन का कार्यक्रम दिखाने से हम सही ठहर जाते हैं?

आराधना में मनोरंजन होने का तर्क यह है कि हमें आराधना सभाओं में लोगों को लाने के लिए जो भी करना आवश्यक हो करना चाहिए, फिर उनके वहां आ जाने पर उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में खींचने का प्रयास करना चाहिए। बेशक, उम्मीद यह है कि परमेश्वर की उपस्थिति की भूख बढ़ जाने पर उन्हें आराधना में अपनी अगुआई के लिए मनोरंजन की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। सच्चाई यह है कि ये ढंग वैसे कभी काम नहीं करते, जैसे इसके करने की इच्छा की जाती है। विचार यह है कि सच्ची आराधना के लिए किसी की तड़प संदेहास्पद है। डॉन चैम्बर्स ने निष्कर्ष निकाला कि मनोरंजन ''भय और भक्ति के बोध को जो परमेश्वर की उपस्थिति में उसके सामने होना चाहिए, कम करता है।'' उसने आगे कहा, ''परमेश्वर के साथ मिलना एक गम्भीर बात है

और जो लोग उसकी उपस्थिति में आना चुनते हैं उन्हें बड़ी भक्ति और भय के साथ आना चाहिए।''[3]

1992 में मैं एक ऐसे दल का भाग था, जो विशाल यूक्रेनियन नगर में गया। हमने नगर के बीच में एक खुले मंच में कैम्पेन करने की अनुमति ले ली। पहले आने वाले लोगों में से कइयों ने यह निराशा जताई कि हमने उन्हें केवल बाइबलें दी हैं। कुछ दिन पहले अमेरिका से एक और दल वहां आया था, जिसने उन्हें टीवी और साइकिल दिए थे। उन्होंने खेल का एक बहुत बड़ा मैदान किराये पर लिया और द्वार में से प्रवेश करने वाले हर व्यक्ति को टिकट दी। आने वाले हर व्यक्ति को एक टिकट भरने और उसे डिब्बे में डालने के लिए कहा गया था। आने वाले लोगों में जिसके परिवार के अधिक लोग थे, उतना ही परिवार के लोगों के लिए इनाम जीतने का अधिक अवसर था। उस दल के नगर से जाने के कई दिन बाद तक हम लोगों को इनामों की बातें करते सुनते रहे। उन्हें हैरानगी थी कि हमने वैसा क्यों नहीं किया। मेरी सोच यह थी कि यह दल लोगों को लालच देकर खींच रहा था न कि परमेश्वर की ओर। स्थानीय लोगों में से कुछ ने हमें ''दूसरे दर्जे'' का माना, क्योंकि जो हम दे रहे थे, वह उन्हें उतना आकर्षित नहीं कर रहा था, जितना पहले वाले दल ने देकर किया था। बिना किसी संदेह के वह दल लोगों के साथ मिल गया था, परन्तु क्या उन्होंने लोगों में से किसी को परमेश्वर के साथ मिलाया?

बेशक, कारोबारी जगत में ''ग्राहक हमेशा सही होता है।'' लोगों की आवाज़ परमेश्वर की आवाज़ को दबा लेती है। व्यक्तिगत विचार यह तय करने में मुख्य कारक बन जाता है कि सार्वजनिक आराधना में क्या होना है। डेविड वेलस ने लिखा है कि ''एकमात्र मान्य अधिकार व्यक्तिगत प्राथमिकता का है।''[4] ग्राहक को वह पाने की आदत होती है, जो वह चाहता हो, वरना वह उस चीज़ को नहीं खरीदेगा।

सारांश

आराधना के लिए परमेश्वर की पुकार का उत्तर देने के लिए हमें इस बात पर विचार करना आवश्यक है कि हमारी आराधना हमारी मूर्तिपूजक संस्कृति की झलक ही है या हमारी मूर्तिपूजक संस्कृति को परमेश्वर से जोड़ने का एक पुल। परमेश्वर को हमेशा से इस बात का ध्यान रहा है कि उसके लोग मूर्तिपूजक संस्कृति से कुछ अधिक ही प्रभावित होते हैं। इसके साथ वह चाहता है कि हम लोगों को मूर्तिपूजक संस्कृतियों से मसीही संस्कृति की ओर पार आने में सहायता के लिए पुल बनाएं। लियोनार्ड एलन ने आधुनिक धर्म का यह अवलोकन किया है:

> गहन सांसारिक माहौल [में यह बढ़ता है]। परन्तु जैसा कि नये युग की लहर में अत्यधिक मूढ़ता में देखने पर, यह आत्म मोह भरा, उदार विचारों वाला और शौकीन हो जाता है। लोग धर्म का मूल्य यहां तक लगाते हैं कि यह बढ़ कर अपने आप को ही पूरा करता है। यह निर्णय देते हुए कि यह कितनी अच्छी तरह काम करता है और उन्हें कैसा लगता है, कभी इस ओर, कभी उस ओर और कभी किसी दूसरी ओर में दिलचस्पी लेते हैं।[5]

लोगों के लिए बनाइ गई आराधना एक अद्भुत चिकत्सकीय गतिविधि हो सकती है, जो हमें अच्छा अहसास कराकर अपने आप को बढ़ाती है, जो गतिविधि न होकर परमेश्वर को हमारे

जीवनों को बदलकर उसके स्वभाव में ढालने का निमन्त्रण देती है। ऐसी आराधना का वास्तविक खतरा यह है कि परमेश्वर के पास जैसा वह है, पहुंचने के बजाय हम किसी ऐसे देवता का आविष्कार करने लगते हैं, जो अधिक ''आसान'' हो, यानी ऐसा देवता जिसके साथ, हम अपने आप को सहज महसूस करें, जो अधिकतर हमारे जैसा लगता हो और हमारी सांसारिक जीवनशैली से अधिक मेल खाता हो। अन्य शब्दों में एक खतरा यह है कि हम उस परमेश्वर की, जिसने हमें अपने स्वरूप पर बनाया है, आराधना करने के बजाय अपने स्वरूप पर कोई देवता बना लेंगे। ऐसी आराधना से लोग भावना से अधिक भरकर आ सकते हैं, परन्तु वे अपने आप से अधिक और परमेश्वर से कम भरे हो सकते हैं। संसार धोखेबाज है। संसार का आकर्षण हमारी सोच को बदलकर हमारी भावनाओं को उलझा सकता है। हमें लग सकता है और ऐसा अहसास हो सकता है कि हम आराधना कर रहे हैं, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है।

यदि परमेश्वर के लोगों के लिए यह स्पष्ट घोषित करने का कि हम ''इस संसार के नहीं'' हैं (यूहन्ना 17:14, 16) का कोई स्थान और समय है तो निश्चय ही वह आराधना सभा में है। आराधना पवित्र भूमि है। सांकेतिक रूप में हम सभा में संसार में से जाते हैं तो हमें अपने जूते उतार देने आवश्यक हैं। परमेश्वर की उपस्थिति में कदम रखने के समय हमें संसार की गन्दगी और झगड़े को पीछे छोड़ देना आवश्यक है। हो सकता है कि संसार को समझ न आए और वह इस घोषणा से ठोकर खाए, परन्तु यीशु ने स्वयं कहा, ''... मैं ने तुम्हें संसार में से चुन लिया है इसी लिए संसार तुम से बैर रखता है'' (15:19)। यीशु ने हमेशा अपनी संस्कृति से जुड़ाव नहीं रखा और न ही हम रखेंगे। उसकी इच्छा तो अपने पिता से जुड़े रहने की थी। यही हमारी भी इच्छा होनी चाहिए।

जब हम भलाई के लिए इस संसार को पीछे छोड़कर स्वर्ग के द्वार में प्रवेश करेंगे तो हमें परमेश्वर के सिंहासन के आस-पास सदा-सदा के लिए उसकी महिमा और स्तुति करने का अवसर मिलेगा। वहां हम उस सभा में शामिल होंगे जो कभी ''पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु, परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था, और जो है, और जो आने वाला है'' (प्रकाशितवाक्य 4:8) कहते नहीं थकते। परमेश्वर की पवित्रता यह मांग करती है कि हमारी आराधना संसार से प्रभावित हुए बिना पवित्र हो।

टिप्पणियां

[1]एल्फ्रेड पी. गिबस, *वरशिप: द क्रिश्चियन 'स हाइट्स ओक्यूपेशन,* द्वितीय संस्करण (कैनसस सिटी, कैनसस: वाल्टरिक पब्लिशर्स, तिथि नहीं), 21, 41. [2]डेविड एफ. वैल्स, *गॉड इन द वेसटलैंड: द रिएलिटी ऑफ़ ट्रुथ इन ए वर्ल्ड ऑफ़ फैडिंग ड्रीम्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कंपनी, 1994), 56. [3]डॉन चैम्बर्स, *शोटाइम ! वरशिप इन द एज़ ऑफ़ शो बिजनेस* (नैशविल्ले: इक्कीसवीं शताब्दी, क्रिश्चियन, 1997), 45-46. [4]वैल्स, 148. [5]सी. लियोनॉर्ड एलन, *द क्रसिफिकेशन चर्च* (अबिलेन, टैक्सस: अबिलेन क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी प्रैस, द्वितीय संस्क., 1990), 36-37.